ISSN 2455-6033

# मीरायन

यू.जी.सी. केयरलिस्ट में सम्मिलित पत्रिका

वर्ष-18 अंक : 2 ( पूर्णांक - 70 )

जून-अगस्त, 2024

OPPO Reno8 T 5G

मीरा स्मृति संस्थान चित्तौड़गढ़ की बहुअनुशासनिक त्रैमासिक शोधपत्रिका

| क्र.सं. | आलेख/रचना | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1. | मीरा-पद | 05 |
| | 1. **सन्त मीराबाई**<br>(1) थें तो पलक उघाड़ो ..... (2) नहिं भावै थाँरौ ..... | |
| 2. | मीरा-प्रशस्ति | 06 |
| | 2. **स्व. पं. शोभालाल शास्त्री दशोरा,** उदयपुर (राजस्थान)<br>को मीराँ सम परम दयाल | |
| 3. | **सम्पादकीय** | 07 |
| | 3. **प्रो. सत्यनारायण समदानी,** चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)<br>मनुस्मृति : विश्व का प्रथम मानव धर्मशास्त्र<br>एवं आदिविधि शास्त्र-एक पर्यालोचन | |
| 4. | **मीरा सन्दर्भपक्ष** | |
| | 4. **डॉ. अशोक कुमार,** धर्मशाला (हिमाचलप्रदेश)<br>कृष्ण काव्य परंपरा में मीराबाई का स्थान | 11 |
| | 5. **डॉ. प्रेमसिंह,** जोधपुर (राजस्थान)<br>मीराबाई की ऐतिहासिक छवियाँ : भक्तमाल और ख्यात साहित्य | 15 |
| 5. | **संत-भक्त पक्ष** | |
| | 6. **डॉ. सुरेशसिंह राठौड़,** बान्दरसिंदरी (किशनगढ़-राजस्थान)<br>संत नागरीदास की काव्य चेतना | 22 |
| | 7. **प्रो. (डॉ.) राकेश कुमार,** गान्धीनगर (गुजरात)<br>प्राचीन वैज्ञानिक : ऋष्यश्रृंग ऋषि | 28 |
| | 8. **डॉ. मलकीयत सिंह,** धर्मशाला (हिमाचलप्रदेश)<br>संत कबीर का समाज दर्शन | 32 |
| | 9. **डॉ. सुनील कुमार यादव,** विजयपुर (कर्नाटक)<br>संपूर्ण विश्व की उत्कृष्ट संत साहित्य संपदा में<br>'अक्का' का नाम अजर-अमर रहेगा। | 36 |
| | 10. **डॉ. हरजिन्दर सिंह एवं प्रो. चन्द्रकान्त सिंह,** धर्मशाला (हिमाचल)<br>पंजाब के सामाजिक-सांस्कृतिक निर्माण में निर्मला पंथ का योगदान | 42 |
| | 11. **डॉ. वन्दना शर्मा,** हिसार (हरियाणा)<br>सुन्दरकाण्ड के आधार पर हनुमान के चरित्र का अध्ययन व विश्लेषण | 48 |
| 6. | **इतिहास पक्ष** | |
| | 12. **श्री हर्षसिंह गहलोत,** जयपुर (राजस्थान)<br>मुगल शासकों की उदार धार्मिक नीति : जैन दर्शन का प्रतिबिंब | 51 |
| | 13. **सौरभराय एवं डॉ. राजीव कुमार,** नॉर्थ त्रिपुरा<br>स्वजागरण में संन्यासी विद्रोह की भूमिका :<br>बंगाल एवं बिहार के विशेष संदर्भ में | 60 |

मीरा-संदर्भपक्ष

# कृष्ण काव्य परंपरा में मीराबाई का स्थान

- डॉ. अशोक कुमार

मध्यकालीन काव्य धारा में भगवान कृष्ण का विलक्षण व्यक्तित्व रहा है। भागवत पुराण तथा महाभारत में श्रीकृष्ण को विष्णु के अवतार के रूप में मानकर उनके विभिन्न क्रियाकलापों जैसे कृष्ण की बाल लीलाओं, प्रणय लीलाओं, माधुर्य भाव से युक्त क्रीड़ाओं के साथ, गीता का उपदेश देने का वर्णन प्रमुख रूप से किया गया है। हिंदी साहित्य में कृष्ण काव्य के प्रवर्तन का श्रेय मैथिली कोकिल विद्यापति को जाता है जिन्होंने गीतगोविंद के रचयिता जयदेव का अनुसरण करते हुए राधा-कृष्ण की प्रेमलीलाओं का चित्र अंकित किया है। इसके अतिरिक्त कृष्ण काव्य को दृढ़तर आयामों पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय अष्टछाप के कवियों को जाता है जिनमें सर्वप्रमुख सूरदास हैं जिन्होंने भागवत पुराण को आधार मानकर कृष्ण की बाललीलाओं का चित्रण करते हुए 'सूरसागर' एवम् 'सूरसारावली' की रचना की। अष्टछाप कवियों के अतिरिक्त राधावल्लभ संप्रदाय, हित हरिवंश, चैतन्य संप्रदाय, हरिदासी संप्रदाय आदि ने कृष्ण भक्ति काव्य की रचना की है। राजस्थान की मरुभूमि में जन्में हिन्दी भक्ति साहित्य में और कृष्ण भक्त कवियों की परंपरा में कवयित्री मीराबाई का नाम भी सम्मान से लिया जाता है। मीराबाई मध्यकाल की अकेली कवयित्री है जिनकी कविताओं में भक्ति और दर्शन के साथ एक नारी की पीड़ा का दर्द भी अभिव्यक्त हुआ है। प्रेम की दीवानी मीरा के पदों में इतनी प्रखर एवं निश्चल अभिव्यक्ति हुई है कि शायद किसी भी कृष्ण भक्त कवियों का काव्य उसकी समता कर सकेगा। "वह मुख्य रूप से अनुभूतियों की कवयित्री है, कोई दार्शनिक या सांप्रदायिक आग्रह उनकी भाव धारा को नहीं बांध पाता है। चौरासी वैष्णव की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता में आए मीरा संबंधी संदर्भों से संकेत मिलता है कि गिरिधर नागर में अपनी अटूट श्रद्धा के बावजूद उन्होंने पुष्टिमार्ग में दीक्षित होना स्वीकार नहीं किया था। मीरा का काव्य प्रमाण है कि किसी वाद या रूढ़ि चिंतन पद्धति से आक्रांत हुए बिना भी उत्कृष्ट काव्य रचना की जा सकती है। आज की विचारक्रांत हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षरों के लिए मीरा का काव्य प्रेरक और मार्गदर्शक बन सकता है"[1] मीराबाई ने मध्यकालीन नारी समुदाय की पीड़ा को भी अभिव्यक्त किया है। यदि वह पुरुष होती तो उस पर कुल की मर्यादा, पर्दा प्रथा, साधु संतों के साथ घूमने आदि सामाजिक मर्यादा के उल्लंघन का आरोप नहीं लगता। मीराबाई नारी थी इसलिए उनके पदों में अंकित लोकलाज, कुल की मर्यादा की रक्षा का दायित्व उन पर था। मीरा जानती थी कि उनके कृष्ण लौकिक नहीं अलौकिक हैं, परमब्रह्म परमेश्वर हैं। परंतु मीरा की पीड़ा और संघर्ष मानवीय है, उन्हें प्रभु कृष्ण की भक्ति से लौकिक जीवन के कष्ट को सहन करने की शक्ति मिलती है। मीरा को अपनी पीड़ा का बोध होते हुए भी कृष्ण के प्रति समर्पण भावना पर आस्था भी है। उन्हें कष्ट, पीड़ा आदि सब सहन करने की शक्ति प्रभु कृष्ण की समर्पण भाव की भक्ति करने से आई है। "मीराबाई का काव्य उनके हृदय से निकले सहज प्रेमोच्छवास का साकार रूप है। उनकी वृत्ति एकांतता और समग्रता प्रेम माधुरी में ही रमी है। अपने आराध्य गिरधर गोपाल की विलक्षण रूप छटा के प्रति उनकी अनन्य आसक्ति अनेक शब्द धारा बन कर फूट पड़ी है। कृष्ण प्रेम में मतवाली मीरा ने मन ही मन उनके मधुर मिलन के स्वप्न संजोकर आनंद की अनेकविध व्यंजना की है"[2]